खेत की तैयारी

खेत में गोबर की अच्छी प्रकार से सड़ी हुई खाद 2-3 टन/एकड़ बिखराकर हल द्वारा या ट्रैक्टर कल्टीवेटर द्वारा गहरी जुताई की जाती है । पाटा से मृदा को भुरभुरी कर लेना चाहिए । प्रति एकड़ 3 से 5 किलो बीज को उतनी ही रेत मिलाकर छिड़काव पद्धति से बोना चाहिए । बीजों को बोते समय यह सावधानी रखी जाए कि उन्हें 0.5 से. मी. से अधिक गहराई पर न बोया जाये । पौधे लगाने के उपरांत मवेशियों तथा वन्य प्राणियों से विशेष रुप से सुरक्षा करना आवश्यक है । फफूंद एवं कीटों का प्रबंध भी आवश्कतानुसार जरुरी है । पौधों की निदाई-गुड़ाई करने से पौधों की फलधारण क्षमता बढ़ती है तथा मोटी जड़ों की संख्या में वृध्दि होती है । बुबाई के लिए 40-50 कि.ग्रा. डी.ए.पी. प्रति हेक्टेयर देने से अच्छी पैदावार मिलती है ।

ग्रेडिंग

व्यापारिक तौर पर अश्वगंधा की जड़ों की मोटाई तथा लंबाई के आधार पर निम्नानुसार चार श्रेणियों में बांटा गया है ।

ऐ-ग्रेड - 07 सेमी लंबी 1.5 सेमी व्यास की मुलायम, पूरी चमकदार सफेद

बी-ग्रेड- 07 सेमी लंबी 1.5 सेमी व्यास की ठोस, चमकदार सफेद

सी-ग्रेड- 07 सेमी लंबी 1.5 सेमी व्यास की ठोस, कम चमकदार, कम सफेद

डी-ग्रेड- पतली कटी-फटी पीले रंग की चमक रहित

अश्वगंधा की खेती का आर्थिक विश्लेषण

(एक हेक्टेयर हेतु)

1. खेती हेतु आवश्यक बीज - 7.5 कि.ग्रा.
2. खेती में कुल व्यय (खेत तैयारी, बीज का मूल्य, निदाई-गुड़ाई, कटाई एवं प्राथमिक प्रसंस्करण आदि) - लगभग रु 33 से 35 हजार प्रति हैक्टेयर
3. उत्पादन प्रति हैक्टेयर
   अ. जड़ : 8-10 क्विंटल
   ब. बीज : 50-60 कि.ग्रा.
4. अनुमानित प्रचलित बाजार दर (रु. प्रति कि.ग्रा.)

जड़	बीज	डंढ़ल
रु. 200-350 प्रति कि.ग्रा.	रु. 40-50 प्रति कि.ग्रा.	रु. 10-12 प्रति कि.ग्रा.

ई-चरक ऐप

- जड़ी बूटियों, सुगंधित औषधियाँ, कच्चे माल एवं इनसे संबंधित जानकारी के लिये ई-चरक (ई-मंच) का उपयोग करें ।
- यह ऐप एंड्रॉइड मोबाइल, प्ले स्टोर एवं गूगल पर भी उपलब्ध है ।

क्षेत्रीय सह सुविधा केन्द्र (मध्यक्षेत्र)

राष्ट्रीय औषधी पादप बोर्ड, आयुष मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली

पौध कार्यिकी विभाग, कृषि महाविद्यालय, जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय, अधारताल, जबलपुर (म.प्र.)

संपर्क : 0761-2681200, 97793012385, 8482988599, 9301338726

ई-मेल : rcfccentraljnkvv@gmail.com वेब : https://www.rcfccentral.org

अश्वगंधा

(Withania somnifera **(L.) Dunal.)**

क्षेत्रीय सह सुविधा केन्द्र (मध्यक्षेत्र)

राष्ट्रीय औषधीय पादप बोर्ड

आयुर्वेद, योग एवं प्राकृतिक, यूनानी, सिध्दा और होम्योपैथी (आयुष) मंत्रालय, भारत सरकार

अश्वगंधा

(Withania somnifera **(L.) Dunal.)**

कुल	:	सोलेनेसी (Solanaceae)
हिन्दी नाम	:	असगंध / अश्वगंधा
अंगेजी नाम	:	इंडियन जिन्सेंग
व्यापारिक नाम	:	अश्वगंधा
उपयोगी भाग	:	जड़ पत्तियाँ

व्यापारिक तौर पर खरीफ फसल के रुप में इसकी खेती राजस्थान, गुजरात एवं पश्चिमी मध्यप्रदेश में की जाती है । यह पौधा 50 से 100 से.मी. लम्बा तथा शाखायुक्त होता है । इस की जड़ें माँसल तथा शाखायुक्त होती है । पत्तियाँ 10-12 से.मी. लम्बी, अण्डाकार, सवृन्त तथा एकांतर विन्यास में लगी रहती हैं । पुष्प 1 से.मी. आकार के हरे-पीले रंग के होते हैं, जो पत्तियों के कक्ष में गुच्छ के रुप में लगे रहते हैं । फल 5 से 6 मि.मी. चौड़े गोलाकार, चिकने, पीले-गुलाबी रंग के होते हैं, जो झिल्लीनुमा बाह्य दलपुंज से ढ़के रहते हैं । फल मांसल बेरी होता है जिसमें असंख्य मटमैले पीले बीज होते हैं

यह प्रजाति मुख्य रुप से भारत के समस्त शुष्क क्षेत्रों में बंजर भूमियों पर मैदानी भाग तथा हिमालय क्षेत्र में 1800 मीटर की ऊँचाई तक पाई जाती है । मध्यप्रदेश में सभी जिले विशेष रुप से नीमच, मंदसौर, रतलाम, झाबुआ, धार, जबलपुर आदि में अश्वगंधा खेती की जाती है । इसके अतिरिक्त यह राजस्थान के नागौर, पंजाब के तराई क्षेत्रों, उत्तराखंड के मैदानी क्षेत्रों, हरियाणा, उत्तरप्रदेश, गुजरात, महाराष्ट्र तथा दिल्ली के आसपास फसल के तौर पर उगायी जाती है ।

औषधीय उपयोग

अश्वगंधा की जड़ तथा पत्तियों का उपयोग पेट के कीड़े मारने तथा फोड़ों को ठीक करने में लिया जाता है । आंतों की सूजन, अल्सर, गठिया की सूजन, तपेदिक, बच्चों की दुर्बलता, वृध्दावस्था, मांसपेशियों में थकान, स्वप्नदोष आदि रोगों के उपचार में भी इसका प्रयोग किया जाता है ।

अश्वगंधा की जड़ों का चूर्ण बराबर मात्रा में शहद अथवा घी के साथ मिलाकर नपुंसकता तथा प्रजनन से संबंधित कमजोरी में उपयोग किया जाता है । जड़ का काढ़ा प्रसूता स्त्रियों तथा वृध्द लोगों के लिए पौष्टिक तथा स्वास्थ्यप्रद होता है । दूध उत्पन्न करने तथा दूध बढ़ाने वाली दवा के रुप में भी इसका उपयोग किया जाता है । दृष्टि दोष में इसकी जड़ के चूर्ण को मुलहठी के चूर्ण के साथ मिलाकर आंवले के रस में लुगदी बनाकर किया जाता है ।

मृदा एवं जलवायु

उचित जल निकासी वाली बुलई-दोमट तथा हल्की लाल-पीली मिट्टी में इसे सहज ही उगाया जा सकता है । कम उपजाऊ तथा असिंचित भूमि में भी इसकी खेती की जा सकती है, इसकी खेती के लिए 500 से 700 मि.मी. वर्षा वाले उष्ण कटिबंधीय क्षेत्र उपयुक्त है । मिट्टी का pH 7.5 से 8 उपयुक्त होता है ।

फसल चक्र

साल में दो बार रबी एवं खरीब की फसल के रुप में इसे लगाया जाता है । प्राय: देखा गया है कि रबी की फसल के समय बोये गए पौधे उच्च गुणवत्ता युक्त होते हैं जिसमें जड़ों की मात्रा एवं एल्केलाइड्स की मात्रा उचित होती है ।

कृषि तनकीक

इसकी फसल मध्यम वर्षा (650-700 मि.मी.) में अच्छी होती है । अश्वगंधा के अच्छे उत्पादन के लिए उन्नत प्रजातियों का उपयोग करना चाहिए, जैसे जवाहर असगंध-20, जवाहर असगंध-134, सिमपुष्टि, पोषिता, रक्षिता, वल्लभ आदि । अश्वगंधा की खेती के लिये भूमि की अच्छी प्रकार से जुताई कर समतल कर लिया जाता है । एक हैक्टेयर में 10-12 कि.ग्रा. बीज छिड़काव विधि से बुवाई करके आवश्यकतानुसार पानी दिया जाना चाहिए है । यह कार्य सितम्बर-अक्टूबर माह में कर लेना चाहिए । बीज की घनी बुवाई से बचने हेतु उस में रेत मिलाकर बुवाई करना चाहिए ताकि पौधों से पौधों के मध्य उचित दूरी बनी रहे । अश्वगंधा कम पानी की फसल है । अत: इसे सिंचाई की ज्यादा आवश्क्ता नहीं होती है ।

सामान्यत: असगंध की खेती के लिए बीज बोया जाता है । बुबाई के लिए पंक्तियों के बीच की दूरी 30 से.मी. होनो चाहिए ताकि इस में निदाई गुड़ाई का कार्य सुगमता से किया जा सके । अच्छे उत्पादन के लिए प्रति हेक्टेयर लगभग 6 से 8 लाख पौधें होने चाहिए । 4-5 माह में फसल तैयार होगी । बीजों का संग्रहण समय-समय पर कर लिया जाता है ।

फसल तैयार होने पर इसकी पत्तियाँ सूखने लगती हैं तथा फल लाल होकर पक जाते हैं । जड़ों के विदोहन हेतु तने को कॉलर से काट कर अलग कर लिया जाता है तथा जड़ों को सावधानी पूर्वक खोद कर 7-10 से.मी. लम्बाई की जड़ों को काट कर या तोड़ कर साफ कर लिया जाता है जड़ो की मोटाई, लम्बाई तथा दिखावट के आधार पर भाव का निर्धारण होता है ।

पौधों में पुष्पधारण अक्टूबर-नवम्बर में होता है । फरवरी से मार्च के बीच फल पक कर तैयार हो जाते हैं । बीजों की जीवनक्षमता अवधि 12 से 18 माह तक होती है । बीजों में 3 से 6 माह की सुसुप्तावस्था होती जो समय रहते समाप्त हो जाती है । बीजों की अंकुरण क्षमता 30 से 40 प्रतिशत पायी जाती है तथा पौध प्रतिशतता 20-25 होती है । बीजों का भण्डारण वायुरोधक प्लास्टिक जार या पॉलीथीन में करने पर अधिक समय तक इनकी जीवन क्षमता (viabillity) बनी रहती है । बीजों का उपयोग 8-12 माह तक कर लेना चाहिए ।

बीजोपचार

बीजों को 100 पी.पी.एम. जी.ए.3 के घोल में 12-24 घंटे उपचारित कर खेत में बोने से उचित अंकुरण प्राप्त होता है ।